

Sl.No. :

नामांक	Roll No.

No. of Questions – 23

P-95-Sanskritam - II

No. of Printed Pages – 7

यहाँ से काटिए

## प्रवेशिका परीक्षा, 2023

### PRAVESHIIKA EXAMINATION, 2023

संस्कृतम्

(द्वितीय- प्रश्नपत्रम्)

समय : 3:15 सपादहोरात्रयम्

पूर्णांक : 80

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फालूँ

परीक्षार्थीभ्यः सामान्य-निर्देशः

- 1) परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रोपरि नामाङ्कः अनिवार्यतः लेख्यः।
- 2) सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
- 3) प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरम् उत्तरपुस्तिकायामेव लेख्यम्।
- 4) प्रत्येकं प्रश्नभागस्य उत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखितव्यम्।

यहाँ से काटिए

- |      |                                      |                           |
|------|--------------------------------------|---------------------------|
| 1)   | वस्तुनिष्ठ प्रश्नाः                  | [12 × 1 = 12]             |
| i)   | कः कस्मिन्नपि काले न जायते ?         | [1]                       |
|      | अ) देवः                              | ब) नरः                    |
|      | स) रामः                              | द) आत्मा                  |
| ii)  | सर्वे गुणाः किम् आश्रयन्ते -         | [1]                       |
|      | अ) सम्मानम्                          | ब) काश्चनम्               |
|      | स) बलम्                              | द) पुण्यकर्मम्            |
| iii) | नरेन्द्रदेवः शिष्यत्वं गृहणाति -     | [1]                       |
|      | अ) रामकृष्णपरमहंसस्य                 | ब) स्वामिनः विवेकानन्दस्य |
|      | स) स्वामिनः दयानन्दस्य               | द) स्वामिनः अखण्डानन्दस्य |
| iv)  | वरतन्तुशिष्यः कः ?                   | [1]                       |
|      | अ) रघुः                              | ब) अजः                    |
|      | स) कौत्सः                            | द) रामः                   |
| v)   | कैकेयी कस्य राज्याभिषेकम् इच्छति ?   | [1]                       |
|      | अ) रामस्य                            | ब) लक्ष्मणस्य             |
|      | स) भरतस्य                            | द) शत्रुघ्नस्य            |
| vi)  | कम्बुग्रीवो नाम कच्छपः निवसति -      | [1]                       |
|      | अ) वने                               | ब) जलाशये                 |
|      | स) नगरे                              | द) ग्रामे                 |
| vii) | जर्जरवंशेन भिक्षापात्रं ताडयति स्म - | [1]                       |
|      | अ) हिरण्यकः                          | ब) मूषकः                  |
|      | स) कम्बुग्रीवः                       | द) ताप्रचूडः              |

- viii) स्वर्णहंस—स्वर्णपक्षिराजकथायां नृपस्य कथा प्रस्तुताऽस्ति – [1]
- |               |                |
|---------------|----------------|
| अ) चित्ररथस्य | ब) देवदत्तस्य  |
| स) देवव्रतस्य | द) ताम्रचूडस्य |
- ix) सिंहेन स्वगृहमागच्छता कः प्राप्तः? [1]
- |           |              |
|-----------|--------------|
| अ) मूषकः  | ब) शृगालसुतः |
| स) गजसुतः | द) सिंहशिशुः |
- x) एकबुद्धिः आसीत् – [1]
- |            |            |
|------------|------------|
| अ) मूषकः   | ब) मत्स्यः |
| स) मण्डूकः | द) धीवरः   |
- xi) ‘लता’—शब्दस्य तृतीयाविभक्ति—द्विवचनस्य रूपमस्ति – [1]
- |          |              |
|----------|--------------|
| अ) लते   | ब) लताभ्याम् |
| स) लतयोः | द) लताभिः    |
- xii) ‘दा’—धातोः लट्टलकार—प्रथमपुरुष—बहुवचनस्य रूपमस्ति – [1]
- |           |         |
|-----------|---------|
| अ) ददन्ति | ब) ददतु |
| स) ददाति  | द) ददति |
- 2) रिक्तस्थानानि पूरयत – [6×1=6]
- i) नैनं छिन्दन्ति ..... नैनं दहति पावकः। [1]
  - ii) आलस्यं हि ..... शरीरस्थो महारिपुः। [1]
  - iii) पुरा देवासुरे ..... पिता ते मम राघव। [1]
  - iv) ननमययुतेयं ..... भोगिलोकैः। [1]
  - v) अनुप्राप्तः शब्दसाम्यं वैष्णव्येऽपि ..... यत्। [1]
  - vi) सर्वज्ञः सुगतो ..... धर्मराजस्तथागतः। [1]

- 3) अतिलघूतरात्मक प्रश्नाः [12×1= 12]
- i) नरकस्य द्वारं कतिविधम्? [1]
  - ii) पाणिः केन विभाति? [1]
  - iii) कैकेयी नृपं कति वरम् अयाचत? [1]
  - iv) अस्मिन् लोके कः जीवः श्लाघ्यतमः? [1]
  - v) गुरुदक्षिणायां महर्षिः वरतन्तुः कियद् धनमानेतुम् आदिष्टवान्? [1]
  - vi) कूर्मः नाम किमासीत्? [1]
  - vii) परिव्राजकः कस्यभयात् सिद्धमन्नं नागदन्ते अवलम्बितम्? [1]
  - viii) विमले जले कः क्रीडति? [1]
  - ix) स्वर्णहंस—स्वर्णपद्मिराजकथानुसारं वृहत्पक्षी कस्य शरणं गतः। [1]
  - x) प्राणत्यागेऽपि उपस्थिते किं नैव कर्तव्यम्? [1]
  - xi) “अस्मद्”— शब्दस्य चतुर्थी—विभक्ति—एकवचनसूपं लिखत। [1]
  - xii) “प्रच्छ” — धातोः लोट्टलकारस्य प्रथमपुरुष—बहुवचनसूपं लिखत। [1]

### खण्ड - ब

- 4) सात्विक-आहारस्य स्वरूपं लिखत। [2]
- 5) “रामः कतिवर्षाणि दण्डकारण्ये निवसेत्” इति कैकेयी इच्छति? [2]
- 6) सिंहशिशुश्रृगालपुत्रकथानुसारं गृहं प्रति कः प्रधावितः? [2]

- 7) शतबुद्ध्यादिमत्स्यकथानुसारं मत्स्ययोःनामी लिखत। [2]
- 8) पद्मसरोवरे कीदृशाः हंसाः तिष्ठन्ति स्म ? [2]
- 9) वसन्ततिलका-छन्दसः लक्षणं लिखत। [2]
- 10) मन्दाक्रान्ता-छन्दसः उदाहरणं लिखत। [2]
- 11) यमकालंकारस्य लक्षणं लिखत। [2]
- 12) “नमन्तमपि धीमन्तं न लंघयति कश्चन।” इत्यत्र कः अलंकारः? [2]
- 13) अमरकोशानुसारं देवस्य नामद्वयं लिखत। [2]
- 14) अमरकोशानुसारं लक्ष्म्याः नामद्वयं लिखत। [2]
- 15) “बालक” – शब्दस्य चतुर्थी-विभक्तेः रूपाणि लिखत। [2]
- 16) “कृ”–धातोः लृट-लकार-उत्तमपुरुषस्य रूपाणि लिखत। [2]

खण्ड - स

- 17) अधोलिखितयोः श्लोकयोः एकस्य सप्रसंगं व्याख्या कार्या – [1+2=3]  
 (क) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,  
     नवानि गृहणाति नरोऽपराणि।  
     तथा शरीराणि विहाय जीर्णा –  
         न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥  
 (ख) एवमस्तु गमिष्यामि वनं वस्तुमहंत्वितः।  
     जटाचीरं धरो राज्ञः प्रतिज्ञामनुपालयन्॥
- 18) अधोलिखितयोः श्लोकयोः एकस्य सप्रसंगं व्याख्या लेखनीया – [1+2=3]  
 (क) कुसुमस्तबकस्येव द्रुयी वृत्तिर्मनस्विनः।  
     मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यते वन एव वा॥  
 (ख) इत्थं द्विजेन द्विजराजकान्ति –  
     रावेदितो वेदविदां वरेण।  
     एनोनिवृत्तेन्द्रियवृत्तिरेन  
         जगाद् भूयो जगदेकनाथः॥
- 19) अधोलिखितयोः श्लोकयोः एकस्य सप्रसङ्गं भावार्थः लेख्यः। [1+2=3]  
 (क) कट्वम्ललवणात्युष्णा तीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।  
     आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः॥  
 (ख) आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण,  
     लघ्वी पुरा वृद्धिमुपैति पश्चात्।  
     दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना,  
         छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥
- 20) भवान् नगेन्द्रः, राजकीय-प्रवेशिका-संस्कृत-विद्यालयः, शान्तिनगरस्य छात्रः भ्रमणगमनार्थं दिनत्रयस्य अवकाशाय  
 प्रधानाध्यापकाय प्रार्थनापत्रं लिखतु। [3]

अथवा

भवतः नगरस्य समुचितविकाशाय नगरपालिका-अध्यक्षाय पत्रं लिखतु।

खण्ड - द

21) अधोलिखितगद्ययोः कस्यचिदेकस्य सप्रसङ्गं व्याख्या कार्या – [1+3=4]

- (क) भो मित्र! जम्बालशेषमेतत्सरः सज्जातं, तत्कथं भवान् भविष्यतीति व्याकुलत्वं नो हृदि वर्तते। तच्छुत्वा कम्बुग्रीव आह–भो! साम्प्रतं नाइस्त्यस्माकं जीवितव्यं, जलाभावात्।
- (ख) ततो राजा भृत्यानब्रवीत्–‘भो भो! गच्छत। सर्वान् पक्षिणः गतासून् कृत्वा शीघ्रमानयत।’ राजादेशानन्तरमेव प्रचेलुप्ते। अथ लगुडहस्तानराजपुरुषान् दृष्ट्वा उक्तम्।

22) एकस्याः कथायाः सारांशः संस्कृतभाषायां लेखनीयः। [4]

(क) हिरण्यकताम्रचूडकथा

(ख) सिंहशिशुश्रृगालपुत्रकथा

23) कमप्येकं विषयमवलम्ब्य निबन्धं लिखत। [4]

(क) मम प्रियः कविः

(ख) संस्कृतदिवसः

(ग) महाराणाप्रतापः



**DO NOT WRITE ANYTHING HERE**